सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

पंच गौरव – जिला टोंक

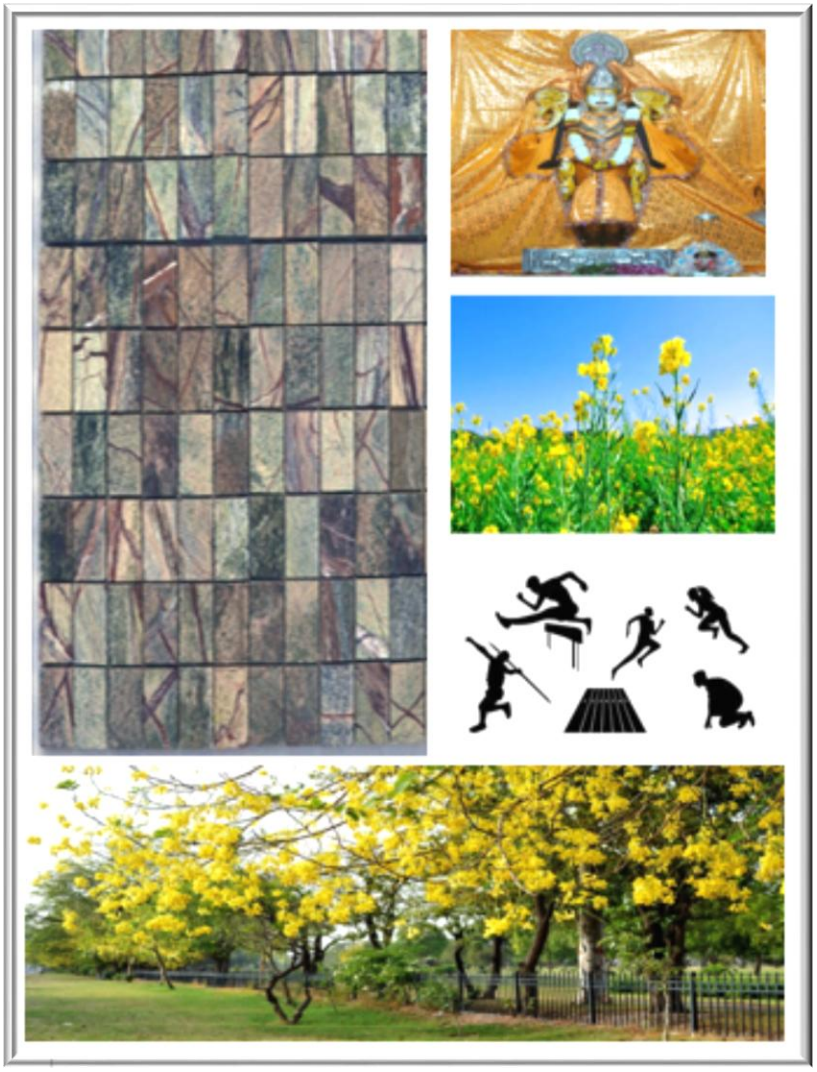

जिला प्रशासन टोंक

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

पंच गौरव कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय

पंच गौरव कार्यक्रम राजस्थान के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संररक्षण,संवर्धन एवं विकास के माध्यम सें जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दिये जाने तथा जिले के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में पंच गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम के अन्तर्गत जिले में एक जिला– एक उत्पाद में स्लेट स्टोन,एक जिला–एक उपज में सरसो,एक जिला –एक वनस्पति प्रजाति में अमलतास,एक जिला–एक खेल में एथलेटिक्स तथा एक जिला–एक पर्यटन में डिग्गी कल्याण जी चिन्हित किये गये है।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को सरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात मे वृद्वि करना
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
- जिलो के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वेज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को 3 बढावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान स्थापित करना
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना

विवरणिका

क्र.स.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	एक जिला एक उत्पाद– स्लेट स्टोन	4
2	एक जिला एक उपज– सरसों	19
3	एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– अमलताश	22
4	एक जिला एक खेल– एथलेटिक्स	33
5	एक जिला एक पर्यटन स्थल– डिग्गी कल्याण जी	36

एक जिला एक उत्पाद– स्लेट स्टोन

यहां की स्लेट स्टोन एक महीन दानेदार कायांतरित (Metamorphic) चट्टान है, जो लाखों वर्षों में शेल (Shale) के रूपांतरण से बनी है। यह अत्यधिक मजबूत, आसानी से विभाजित होने वाली और निर्माण एवं वास्तुकला के लिए उपयुक्त होती है।

टोंक की स्लेट स्टोन अपनी मजबूती, जल प्रतिरोधकता और सौंदर्यात्मक आकर्षण के कारण अत्यधिक मूल्यवान मानी जाती है। इसका उपयोग फर्श, छत और सजावटी अनुप्रयोगों में किया जाता है। इसकी प्राकृतिक बनावट और रंग आंतरिक और बाहरी डिजाइनों में विशिष्टता जोड़ते हैं। स्लेट उद्योग टोंक में कई स्थानीय समुदायों के लिए एक प्रमुख आजीविका स्रोत है, जो खनन, प्रसंस्करण और निर्यात गतिविधियों को समर्थन देता है। वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ODOP) योजना के तहत, टोंक की स्लेट स्टोन को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है, जिससे यह क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

इसकी पर्यावरण–अनुकूल (Eco&friendly) प्रकृति और वैश्विक मांग के कारण, टोंक प्राकृतिक पत्थर उद्योग में एक प्रमुख केंद्र बन चुका है। वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ODOP) पहल और स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ODOP) भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक प्रमुख योजना है, जिसका उद्देश्य देश के विभिन्न जिलों के विशिष्ट उत्पादों और शिल्पों को बढ़ावा देना है। इस पहल का मुख्य लक्ष्य स्थानीय रूप से निर्मित उत्पादों को समर्थन देना और उन्हें आर्थिक विकास में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करना है। यह कार्यक्रम रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है और जिला स्तर की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़

बनाता है। टोंक जिले की स्लेट स्टोन टाइल्स के संदर्भ में, ODOP पहल ने स्थानीय स्लेट उद्योग को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अधिक दृश्यता प्रदान की है।

इस योजना ने स्थानीय कारीगरों, निर्माताओं और व्यापारियों को सरकारी वित्तीय सहायता, कौशल विकास कार्यक्रमों और बाजार संपर्क जैसी योजनाओं का लाभ प्रदान किया है, जिससे वे अपने व्यवसायों का विस्तार कर सकें इसके अलावा, इस पहल ने आधुनिकीकरण और पर्यावरण–अनुकूल खनन तकनीकों को अपनाने को प्रोत्साहित किया है, जिससे टोंक में स्लेट उद्योग का सतत विकास (sustainable Growth) संभव हुआ है। ODOP का केंद्रित दृष्टिकोण न केवल एक पारंपरिक उद्योग को संरक्षित कर रहा है, बल्कि टोंक स्लेट स्टोन टाइल्स को एक मांग में रहने वाला उत्पाद बना रहा है, जिससे क्षेत्रीय आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल रहा है और टोंक की वैश्विक पहचान मजबूत हो रही है।

ऐतिहासिक महत्व

टोंक में स्लेट स्टोन खनन का ऐतिहासिक संदर्भ कई शताब्दियों पुराना है। इस क्षेत्र की प्राकृतिक भूवैज्ञानिक विशेषताओं ने इसे इस गतिविधि के लिए एक प्रमुख केंद्र बना दिया है। प्राचीन अरावली पर्वतमाला के अंतर्गत स्थित टोंक अपनी समृद्ध स्लेट स्टोन खदानों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह कायांतरित (Metamorphic) चट्टान, तेज दबाव और उच्च तापमान में शेल (Shale) के धीरे–धीरे रूपांतरण से बनी होती है।

इस अनूठी भूगर्भीय संरचना ने टोंक की स्लेट स्टोन को मजबूती, जल प्रतिरोधकता और सौंदर्यात्मक आकर्षण जैसे विशेष गुण प्रदान किए हैं, जिनका निर्माण और वास्तुकला के लिए सदियों से उपयोग किया जाता रहा है।

- **पारंपरिक खनन प्रक्रिया**

पारंपरिक रूप से, टोंक में स्लेट स्टोन खनन एक श्रमसाध्य और हस्तचालित प्रक्रिया थी, जिसे विशेषज्ञ परिवारों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया गया। पहले इस पत्थर का उपयोग स्थानीय रूप से फर्श, छत और दीवारों पर लगने वाले पैनलों (Wall Cladding) के लिए किया जाता था, क्योंकि यह प्राकृतिक रूप से इन्सुलेशन (Insulation) प्रदान करता है और मौसम के प्रभावों से बचाव करता है।

समय के साथ, जब भारत और विदेशों में प्राकृतिक पत्थरों की मांग बढ़ी, तब टोंक में स्लेट स्टोन खनन अधिक संगठित हुआ और छोटे उद्योगों और सहकारी समितियों (Cooperatives) के रूप में विकसित हुआ।

- **वर्तमान परिदृश्य**

आज, टोंक का स्लेट स्टोन उद्योग आधुनिक खनन और प्रसंस्करण तकनीकों के साथ पारंपरिक शिल्प कौशल का सम्मिश्रण कर चुका है। यह उद्योग वैश्विक बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होते हुए भी अपने ऐतिहासिक महत्व को संरक्षित किए हुए है।

- **शिल्पकला (Craft)**

टोंक में स्लेट स्टोन खनन और निर्माण की शिल्पकला समय के साथ अत्यधिक विकसित हुई है। यह परंपराकुशल कारीगरों की पीढ़ियों के ज्ञान और तकनीकों पर आधारित रही है।

इतिहास में, स्लेट खनन एक श्रम–प्रधान और हस्तचालित प्रक्रिया थी, जहां स्थानीय कारीगर सरल औजारों का उपयोग करके पत्थर को पतली, उपयोगी परतों में विभाजित करते थे। यह विशेष ज्ञान, जिसमें पत्थर की पहचान, निकासी और आकार देने की तकनीकें शामिल थीं, परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता था, जिससे इस शिल्प को संरक्षित और विकसित किया जा सका।

- **आधुनिकीकरण और शिल्प कौशल का संतुलन**

जैसे–जैसे स्लेट स्टोन की मांग स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ी, यह शिल्पकला नई तकनीकों और बाजार की जरूरतों के अनुसार ढलती गई। पारंपरिक हस्तचालित विधियों के साथ–साथ, अब यंत्रीकृत औजारों और आधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों का भी उपयोग किया जाता है। इससे खनन प्रक्रिया अधिक कुशल हुई और स्लेट स्टोन का बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हुआ।

हालांकि, औद्योगीकरण की ओर बदलाव के बावजूद, टोंक के स्लेट स्टोन उद्योग में कारीगरी का मूल तत्व बना हुआ है। कारीगर बारी की से स्लेट को काटते और निखारते हैं, ताकि उसकी प्राकृतिक सुंदरता बनी रहे। इस विकास क्रम ने परंपरागत तकनीकों के संरक्षण और नवीनता को अपनाने के बीच संतुलन बनाए रखा है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह शिल्पकला जारी रहे और आधुनिक जरूरतों को भी पूरा कर सके। पीढ़ियों से हस्तांतरित

कौशल ने टोंक के कारीगरों को उच्च गुणवत्ता बनाए रखने में सक्षम बनाया है, जिससे टोंक कीस्लेट स्टोन उद्योग में वैश्विक प्रतिष्ठा मजबूत हुई है।

- **औद्योगिक अवलोकन**

1. **खनन एवं प्रसंस्करण** (Mining & Processing)

टोंक में स्लेट स्टोन खनन प्रक्रिया एक संगठित और विकसित होती हुई प्रणाली है, जिसका उद्देश्य सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली स्लेट स्टोन का कुशलतापूर्वक निष्कर्षण करना है, साथ ही पर्यावरणीय स्थिरता को प्राथमिकता देना है।

स्लेट स्टोन खनन की प्रक्रिया भूवैज्ञानिक सर्वेक्षणों (Geological Surveys) से शुरू होती है, जिससे स्लेट भंडारों की पहचान की जाती है और खनन के दौरान पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव सुनिश्चित किया जाता है।

2. **सतत खनन** (Sustainable Mining Practices)

टोंक में पर्यावरण–अनुकूल (Eco&Friendly) खनन पद्धतियों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिससे उद्योग पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रख सके।

इन टिकाऊ (Sustainable) तकनीकों में निम्न शामिल हैं :–

- **न्यूनतम अपशिष्ट उत्पादन**–निकाले गए स्लेट के सभी भागों का उपयोग कर वेस्टेज को कम करना।
- **जल पुनर्चक्रण (Water Recycling)–**पत्थर काटने की प्रक्रिया में पानी का पुनः उपयोग।
- **खनन के बाद भूमि पुनर्स्थापना (Reclamation Efforts)**–खदानों को भरकर और वनस्पति पुनः लगाने से पर्यावरणीय क्षति की भरपाई।
- **ऊर्जा–कुशल मशीनरी (Energy&Efficient Machinery)**–कार्बन फुटप्रिंट कम करने के लिए उन्नत उपकरणों का उपयोग।इन पर्यावरण–अनुकूल तरीकों के माध्यम से टोंक का स्लेट स्टोन उद्योग एक सशक्त और स्थायी औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित हो रहा है, जो आर्थिक प्रगति और पारिस्थितिकीय संतुलन दोनों को बनाए रखता है।

टोंक में स्लेट स्टोन टाइल्स के आकार देने, काटने और फिनिशिंग की आधुनिक प्रसंस्करण तकनीकें:–

निष्कर्षण और उत्खनन (Extraction and Quarrying)

नियंत्रित विस्फोट और यांत्रिक खुदाई–स्लेट स्टोन को खदानों से नियंत्रित विस्फोट (Controlled Blasting) और यांत्रिक खुदाई (Mechanical Excavation)के माध्यम से निकाला जाता है। यह विधि सटीकता सुनिश्चित करती है और पर्यावरणीय क्षति को न्यूनतम रखती है।

1. **विभाजन और परत बनाना (Cleaving and Splitting)**
   हस्तचालित और यांत्रिक विभाजन–निकाले गए स्लेट ब्लॉकों को विशेष उपकरणों की मदद से पतली परतों में विभाजित किया जाता है। पारंपरिक रूप से यह कार्य हाथ से किया जाता था, लेकिन अब हाइड्रोलिक स्प्लिटर्स (Hydraulic Splitters) का उपयोग करके दक्षता बढ़ाई जाती है और स्लेट की प्राकृतिक बनावट को संरक्षित रखा जाता है।

2. **कटिंग (Cutting)**
   डायमंड वायर सॉ (Diamond Wire Saws) और सर्कुलर ब्लेड्स (Circular Blades)– बड़े स्लेट स्लैब्स को विशेष आकार और आकार में काटने के लिए उन्नत डायमंड वायर सॉ और उच्च–सटीकता वाले सर्कुलर ब्लेड्स का उपयोग किया जाता है। यह तकनीक पारंपरिक हाथ काटने की विधियों की तुलना में अधिक तेज और सटीक है तथा वेस्टेज को भी कम करती है।

3. **सतह फिनिशिंग (Surface Finishing)**

   ग्राइंडिंग और पॉलिशिंग–स्लेट की सतह को ग्राइंडिंग मशीनों की सहायता से चिकना और पॉलिश किया जाता है। यह रफ किनारों को हटाकर एक समान फिनिश प्रदान करता है। फिनिशिंग स्तर–प्राकृतिक मैट (Matte) फिनिश से लेकर हाई–ग्लॉस (High-Gloss) पॉलिश तक विभिन्न स्तरों की फिनिशिंग की जा सकती है।

4. **कैलिब्रेशन (Calibration)**

   मोटाई कैलिब्रेशन मशीनें–आधुनिक कैलिब्रेशन मशीनें सभी टाइलों को समान मोटाई में सुनिश्चित करती हैं, जो फ्लोरिंग और दीवारों पर लगाने के लिए महत्वपूर्ण है। यह स्थापना में आसानी और गुणवत्ता में एकरूपता सुनिश्चित करता है।

5. **किनारों की ट्रिमिंग और चेम्फरिंग (Edge Trimming and Chamfering)**
   - **एज प्रोफाइलिंग मशीनें**–इन मशीनों द्वारा टाइलों के किनारों को सुचारू और सीधा बनाने के लिए ट्रिम किया जाता है।
   - **चेम्फरिंग (Chamfering)**–टाइलों के किनारों को थोड़ा झुका (Bevel) कर अधिक आकर्षक और इंस्टॉलेशन में आसान बनाया जाता है।

6. **गुणवत्ता नियंत्रण और ग्रेडिंग (Quality Control and Grading)**
   स्वचालित निरीक्षण प्रणाली (Automated Inspection Systems) – आधुनिक कारखानों में उच्च–स्तरीय निरीक्षण प्रणाली का उपयोग किया जाता है, जो हर टाइल की गुणवत्ता, रंग, बनावट और मजबूती की जांच करता है।

7. **पैकेजिंग और वितरण (Packaging and Distribution)**
   स्वचालित पैकेजिंग लाइन्स (Automated Packaging Lines)

   - टाइलों को सुरक्षित रूप से पैक करने के लिए स्वचालित ला इनों का उपयोग किया जाता है।
   - टाइलों को व्यवस्थित रूप से स्टैक, कुशन और रैप किया जाता है, जिससे परिवहन के दौरान क्षति से बचाव होता है।
   - यह प्रक्रिया उद्योग और निर्यात बाजारों के लिए तैयार उत्पाद सुनिश्चित करती है।
   - इन आधुनिक तकनीकों के माध्यम से टोंक में स्लेट स्टोन उद्योग अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरा उतर रहा है, जिससे इसकी वैश्विक मांग लगातार बढ़ रही है।

- **गुणवत्ता मानक (Quality Standards)**
  टोंक स्लेट स्टोन टाइल्स की विशिष्ट विशेषताएँ (Specific Qualities of Tonk Slate Stone Tiles):–

  1. **मजबूती (Durability)**
     टोंक स्लेट स्टोन टाइल्स अपनी अत्यधिक मजबूती के लिए प्रसिद्ध हैं, जो इन्हें आंतरिक और बाहरी दोनों प्रकार के उपयोग के लिए आदर्श बनाती है। यह पत्थर लाखों वर्षों तक उच्च तापमान और दबाव में बनने के कारण अत्यंत कठोर और घना होता है, जिससे यहभारी दबाव, मौसम परिवर्तन और अन्य प्रकार के घर्षण को सहन कर सकता है। इसकी

टिकाऊ प्रकृति के कारण, स्लेट टाइलें दशकों तक सुरक्षित और प्रभावी बनी रहती हैं, और इनमें न्यूनतम रखरखाव की आवश्यकता होती है।

2. जल प्रतिरोध (Water Resistance)

टोंक स्लेट स्टोन की सबसे प्रमुख विशेषताओं में से एक इसकी उच्च जल प्रतिरोधक क्षमता है। इसकी कम पोरोसिटी (Low Porosity) के कारण यह पानी को अवशोषित नहीं करता, जिससे यह बाथरूम, किचन और बाहरी आंगनों जैसे नमी–युक्त स्थानों के लिए उपयुक्त बनता है। यह शीतकालीन क्षेत्रों में फ्रीज–थॉ चक्र (Freeze&Thaw Cycle) से बचाव करता है, क्योंकि पत्थर में पानी प्रवेश नहीं कर पाता और इस कारण दरारें नहीं पड़तीं।

3. थर्मल इंसुलेशन (Thermal Insulation)

टोंक स्लेट टाइल्स में प्राकृतिक थर्मल इंसुलेशन (गर्मी–रोधी) गुण होते हैं, जो गर्म और ठंडे दोनों प्रकार के वातावरण में तापमान को संतुलित करने में मदद करते हैं।
गर्म क्षेत्रों में, यह टाइलें पैरों के नीचे ठंडी बनी रहती हैं, जिससे प्राकृतिक ठंडक का अहसास होता है। ठंडे क्षेत्रों में, यह टाइलें गर्मी को बनाए रखती हैं, जिससे ऊर्जा दक्षता (Energy Efficiency) बढ़ती है और घर का तापमान संतुलित रहता है। यह विशेषता इको–फ्रेंडली और टिकाऊ निर्माण के लिए आदर्श बनाती है।

4. आकर्षक सौंदर्य (Aesthetic Appeal)

टोंक स्लेट स्टोन टाइल्स प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर होती हैं, जोग्रे, ब्लैक, हरे, लाल और भूरे रंगों के विभिन्न रंगों में उपलब्ध होती हैं। प्राकृतिक बनावट और विशिष्ट पैटर्नप्रत्येक टाइल कोअद्वितीय और जीवंत रूप देते हैं, जिससे यहआधुनिक और पारंपरिक दोनों प्रकार के डिजाइनों को निखारती हैं। इसकी रस्टिक (Rustic) और एलीगेंट (Elegant) उपस्थिति इसे किसी भी स्थान के लिए कालातीत (Timeless) आकर्षण प्रदान करती है।

5. आग और गर्मी प्रतिरोध (Fire and Heat Resistance)

स्लेट एक नॉन–कम्बस्टिबल (Non-Combustible) यानी अग्निरोधी सामग्री है, जिससे टोंक स्लेट स्टोन टाइल्स आग और गर्मी के लिए अत्यधिक प्रतिरोधी बनती हैं। चिमनी, किचन और अन्य उच्च तापमान वाले क्षेत्रों में उपयोग के लिए आदर्श। बाहरी अनुप्रयोगों (Outdoor Applications) में, यह सूर्य की गर्मी के संपर्क में आने के बावजूद अपनी मजबूती बनाए रखती हैं।

6. **फिसलन प्रतिरोध (Slip Resistance)**

इसकी प्राकृतिक बनावट (Textured Surface) के कारण टोंक स्लेट स्टोन टाइल्स फिसलन–रोधी होती हैं, भले ही यह गीली हों। यह बाथरूम, स्विमिंग पूल के किनारे, और वॉकवे जैसी नमी वाली जगहों के लिए आदर्श विकल्प बनती हैं। इसकी रूखी सतह (Rough Finish) पैरों को अच्छा ग्रिप प्रदान करती है, जिससे फिसलने और गिरने की संभावना कम हो जाती है।

निष्कर्षः– टोंक स्लेट स्टोन टाइल्स अपनी मजबूती, जल प्रतिरोध, थर्मल इंसुलेशन, सौंदर्य, आग प्रतिरोध, फिसलन प्रतिरोध और पर्यावरण अनुकूल विशेषताओं के कारण स्थापत्य और निर्माण उद्योग में एक अनमोल संसाधन बनी हुई हैं।

- **टोंक स्लेट स्टोन टाइलों के अनुप्रयोग**

टोंक स्लेट स्टोन टाइलें अपनी बहुमुखी प्रतिभा, मजबूती और सौंदर्य आकर्षण के लिए जानी जाती हैं, जिससे वे कई क्षेत्रों में एक लोकप्रिय विकल्प बनती हैं। विभिन्न क्षेत्रों में उनके उपयोग का अवलोकन इस प्रकार हैः–

आवासीय फर्श :– टोंक स्लेट स्टोन टाइलों का घरों में फर्श के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। इनकी प्राकृतिक बनावट विभिन्न आंतरिक डिजाइनों के साथ मेल खाती है। यह मजबूत और फिसलन–रोधी होने के कारण उच्च आवागमन वाले क्षेत्रों जैसे कि लिविंग रूम, हॉलवे और रसोई के लिए आदर्श होती हैं।

व्यावसायिक फर्शः– कार्यालयों, होटलों और रेस्तरां जैसे व्यावसायिक स्थानों में स्लेट टाइलों का उपयोग किया जाता है क्योंकि ये भारी आवागमन सहने में सक्षम होती हैं और लंबे समय तक अपनी आकर्षक बनावट बनाए रखती हैं। इनकी कम रखरखाव लागत और लंबी उम्र इसे व्यवसायों के लिए एक किफायती विकल्प बनाती है।

छत निर्माणः– स्लेट स्टोन का उपयोग छत के लिए किया जाता है क्योंकि यह मौसम प्रतिरोधी और दीर्घकालिक टिकाऊ होती है। यह बेहतरीन इन्सुलेशन प्रदान करता है और कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियों को झेलने में सक्षम होता है, जिससे यह आवासीय और व्यावसायिक भवनों के लिए एक पसंदीदा विकल्प बनता है।

दीवार क्लैडिंग :– टोंक स्लेट स्टोन टाइलों का उपयोग दीवार क्लैडिंग के रूप में किया जाता है, जिससे आंतरिक स्थानों में एक सुंदर बनावट और आकर्षण जोड़ा जाता है। इनके प्राकृतिक रंग और पैटर्न लिविंग रूम, डाइनिंग एरिया और व्यावसायिक स्थानों में विशिष्ट विशेषता वाली दीवारें बनाने के लिए आदर्श होते हैं।

सजावटी टाइलें :– स्लेट टाइलों का उपयोग बैकस्प्लैश और सजावटी अनुप्रयोगों में भी किया जाता है। विभिन्न रंगों और फिनिश के कारणयह रचनात्मक डिजाइनों के लिए उपयुक्त होती हैं, जिससे आंतरिक स्थानों की सुंदरता बढ़ती है।

लैंडस्केपिंग :– टोंक स्लेट स्टोन का उपयोग पाथवे, गार्डन बॉर्डर और सजावटी चट्टानों के निर्माण में किया जाता है। इसकी प्राकृतिक बनावट बाहरी वातावरण के साथ अच्छी तरह मेल खाती है, जिससे बगीचों और यार्ड की सुंदरता बढ़ती है।

फर्श निर्माण :– स्लेट टाइलें बाहरी फर्श निर्माण के लिए उपयुक्त होती हैं क्योंकि ये टिकाऊ और फिसलन–रोधी होती हैं। इन्हें अक्सर आंगन, पैदल पथ और ड्राइववे में उपयोग किया जाता है, जो एक मजबूत सतह प्रदान करती हैं और बाहरी क्षेत्रों की दृश्य अपील को बढ़ाती हैं।

सौंदर्य आकर्षण :– टोंक स्लेट स्टोन टाइलें केवल अपनी मजबूती और उपयोगिता के लिए ही नहीं, बल्कि उनकी अनूठी प्राकृतिक बनावट और रंगों के लिए भी जानी जाती हैं, जो वास्तुकला की सुंदरता को बढ़ाती हैं।

रंग विविधता :– गहरे और समृद्ध रंगरूटोंक स्लेट स्टोन गहरे ग्रे, काले, हरे, लाल और भूरे रंगों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदर्शित करता है। ये प्राकृतिक रंग आधुनिक से पारंपरिक तक विभिन्न डिजाइनों में सहज रूप से मेल खाते हैं।

अद्वितीय पैटर्न :– प्रत्येक स्लेट टाइल में विशिष्ट प्राकृतिक पैटर्न और रेखाएं होती हैं, जो स्थानों में गहराई और अद्वितीयता जोड़ती हैं। ये विविधताएँ दृश्य आकर्षण को बढ़ाती हैं और संपूर्ण वातावरण में एक विशेष प्रभाव डालती हैं।

बनावट विविधता :– खुरदरी और बनावटयुक्त फिनिशरूस्लेट की प्राकृतिक सतह इसे खुरदरी और स्पर्शनीय गुणवत्ता प्रदान करती है, जिससे यह बाहरी और आंतरिक दोनों स्थानों के लिए उपयुक्त बनती है। इसका खुरदरापन बाहरी स्थानों में लैंडस्केपिंग और हार्डस्केपिंग तत्वों के साथ मेल खाता है।

आंतरिक स्थान :– टोंक स्लेट के समृद्ध रंग और बनावट आंतरिक स्थानों को पूरी तरह बदल सकते हैं। इन्हें फर्श, दीवार क्लैडिंग या सजावटी तत्वों के रूप में उपयोग किया जा सकता है। यह किसी स्थान को फोकल पॉइंट बनाने या अन्य सामग्रियों के साथ संतुलित करने के लिए एक बहुप्रयोज्य विकल्प प्रदान करता है।

बाहरी अनुप्रयोग :– बाहरी अनुप्रयोगों में स्लेट की प्राकृतिक सौंदर्यात्मकता आंगनों, पथों और इमारतों के बाहरी स्वरूप को निखारती है। इसकी प्राकृतिक बनावट पौधों, पत्थरों और जल विशेषताओं के साथ बेहतरीन रूप से मेल खाती है।

- **आर्थिक योगदान**:– टोंक में स्लेट स्टोन उद्योग का स्थानीय रोजगार और आर्थिक प्रभाव रोजगार सृजन निम्न प्रकार है :–

प्रत्यक्ष रोजगार:– स्लेट स्टोन उद्योग खनन, प्रसंस्करण और वितरण में हजारों लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है। इसमें कुशल कारीगरों और श्रमिकों को शामिल किया जाता है, जो खनन और लॉजिस्टिक्स से जुड़े होते हैं। इस उद्योग में मौसम और बाजार की मांग के अनुसार 3,000 से 4,000 प्रत्यक्ष नौकरियों का सृजन होता है।

- **स्लेट स्टोन इकाइयाँ**:– टोंक जिले में लगभग 73 स्लेट स्टोन टाइल निर्माण इकाइयाँ स्थापित हैं, जिनका कुल वार्षिक कारोबार लगभग ₹150 करोड़ है। इन इकाइयों में लगभग 700–800 लोग विभिन्न भूमिकाओं में कार्यरत हैं।
- **निर्यात गतिविधियाँ** :– 73 इकाइयों में से 6 इकाइयाँ सीधे निर्यात कार्यों में संलग्न हैं। टोंक की स्लेट स्टोन टाइलें अमेरिका, रूस, अरब देशों, सिंगापुर, मलेशिया और दुबई जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात की जाती हैं। इसका वार्षिक निर्यात मूल्य लगभग ₹25–30 करोड़ आंका गया है।

अप्रत्यक्ष रोजगार:– प्रत्यक्ष रोजगार के अलावा, यह उद्योग परिवहन, खुदरा, और रखरखाव जैसे संबद्ध क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर प्रदान करता है। इससे आसपास के समुदायों में नौकरी के अवसर बढ़ते हैं और छोटे व्यवसायों को बढ़ावा मिलता है।

कौशल विकास:– निरंतर प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से कारीगर आधुनिक तकनीकों को अपनाकर अपने उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं, जिससे उनकी आय की संभावनाएँ बढ़ती हैं।

कारीगर समुदायों का सशक्तिकरण निम्न प्रकार है :–

पारंपरिक हस्तकला का संरक्षण :– यह उद्योग पारंपरिक कारीगरी को जीवित रखने में सहायक है। यह सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के साथ–साथ कारीगरों को आधुनिक कौशल से भी सशक्त बनाता है।

महिलाओं का सशक्तिकरण :– स्लेट स्टोन उत्पादों के निर्माण और विपणन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जिससे लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलता है और उनके परिवारों की आय व सामाजिक स्थिति में सुधार होता है।

टोंक स्लेट स्टोन टाइलें अपनी अद्वितीय सौंदर्य अपील, मजबूती और बहुपयोगिता के कारण घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं। इनकी मांग मुख्य रूप से निर्माण, आंतरिक सज्जा और लैंडस्केपिंग जैसे क्षेत्रों से प्रेरित है।

1. घरेलू मांग

निर्माण क्षेत्र की वृद्धि :– भारत में आवासीय और वाणिज्यिक निर्माण में प्राकृतिक पत्थरों की बढ़ती मांग ने टोंक स्लेट स्टोन टाइलों के घरेलू बाजार को बढ़ावा दिया है। तेजी से हो रहे शहरीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास के कारण स्लेट टाइलें फर्श, दीवार क्लैडिंग और छत के लिए पसंदीदा विकल्प बन रही हैं।

- **आंतरिक सज्जा के रुझान** :– प्राकृतिक सामग्रियों की ओर बढ़ता झुकाव टोंक स्लेट को लोकप्रिय बना रहा है। इसके समृद्ध रंग और बनावट इसे रसोई और बाथरूम काउंटरटॉप्स, बैकस्प्लैश और सजावटी तत्वों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाते हैं, जिससे घरेलू मांग बढ़ रही है।

- **पर्यावरण–अनुकूल विकल्प** :– उपभोक्ताओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है, जिससे सतत (सस्टेनेबल) सामग्रियों की मांग बढ़ी है। टोंक स्लेट स्टोन एक प्राकृतिक उत्पाद है, जो इन पारिस्थितिकीय अनुकूल प्रवृत्तियों के साथ मेल खाता है और घरेलू बाजार में इसकी मांग को और बढ़ाता है।

2. **अंतरराष्ट्रीय मांग**

निर्यात आंकड़े :– टोंक स्लेट स्टोन टाइलों का निर्यात लगातार बढ़ रहा है। हालिया आंकड़ों के अनुसार, भारत अपने कुल स्लेट स्टोन उत्पादन का लगभग 30: निर्यात करता है, जिसमें टोंक स्लेट का प्रमुख योगदान है।

3. **विकास की संभावनाएँ**

उत्पादों में विविधता :– विभिन्न फिनिश, आकार और अनुप्रयोगों को शामिल करके उत्पाद श्रेणी का विस्तार करने से निर्माताओं को व्यापक ग्राहक आधार तक पहुंचने और विशिष्ट बाजारों में प्रवेश करने में मदद मिलेगी, जिससे कुल मांग में वृद्धि होगी।

सतत विकास पर ध्यान :– जैसे–जैसे अधिक देश सतत निर्माण पद्धतियों को अपनाते हैं, पर्यावरण–अनुकूल सामग्रियों की मांग बढ़ेगी। इस बदलाव से ग्रीन बिल्डिंग प्रमाणन वाले बाजारों में टोंक स्लेट स्टोन के निर्यात के नए अवसर खुल सकते हैं।

सरकारी सहायता एवं ODOP पहल

1. **वित्तीय सहायता**

- **सूक्ष्म एवं लघु उद्यम विकास कार्यक्रमः**– राजस्थान सरकार इस कार्यक्रम के माध्यम से स्लेट स्टोन क्षेत्र में सूक्ष्म और लघु उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसमें उत्पादन, बुनियादी ढांचे के विकास और विपणन प्रयासों के लिए अनुदान एवं ऋण शामिल हैं।
- **राजस्थान निवेश संवर्धन योजनाः** – इस योजना के तहत पात्र स्लेट स्टोन निर्माताओं को निवेश प्रोत्साहन, पूंजीगत निवेश अनुदान जैसी वित्तीय सहायता मिलती है। यह योजना स्लेट स्टोन प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना और विस्तार को प्रोत्साहित करती है, जिससे उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।

2. **सब्सिडी**

- **प्रौद्योगिकी उन्नयन के लिए सब्सिडीः**–सरकार स्लेट स्टोन उद्योग में तकनीकी और मशीनरी उन्नयन के लिए सब्सिडी प्रदान करती है। इस पहल का उद्देश्य उत्पादन क्षमता में सुधार करना, उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाना और निर्माण प्रक्रियाओं को टिकाऊ बनाना है।

- **बाजार विकास सहायताः**– टोंक स्लेट स्टोन उत्पादों के विपणन को बढ़ावा देने के लिए, राजस्थान सरकार व्यापार मेलों, प्रदर्शनियों और खरीदार–विक्रेता बैठकों में भाग लेने के लिए सब्सिडी प्रदान करती है। इससे कारीगरों और निर्माताओं को व्यापक बाजारों तक पहुंचने और अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने में मदद मिलती है।

- **प्रमुख निर्माता और निर्यातक**

प्रेम स्टोन इंडस्ट्रीजः–यह कंपनी प्राकृतिक, पॉलिश और हॉन किए गए विभिन्न फिनिश में विशेषज्ञता रखती है। यह घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में अपनी सेवाएँ प्रदान करती है। मुख्य उत्पाद फ्लोरिंग, वॉल क्लैडिंग और लैंडस्केपिंग के लिए स्लेट टाइल्स।

राहुल स्टोन इंडस्ट्रीज :– यह कंपनी उच्च गुणवत्ता वाले स्लेट उत्पादों के लिए जानी जाती है और यूरोप, उत्तरी अमेरिका और मध्य पूर्व में बड़े पैमाने पर निर्यात करती है। मुख्य उत्पाद विभिन्न प्रकार की स्लेट टाइल्स, पेविंग स्टोन्स और आर्किटेक्चरल प्रोजेक्ट्स के लिए कस्टम–कट स्टोन।

एम.एस. स्टोन इम्पेक्स :– स्लेट स्टोन खनन और प्रसंस्करण में विशेषज्ञ, यह कंपनी गुणवत्ता और स्थायी प्रथाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए जानी जाती है। मुख्य उत्पादरूस्लेट टाइल्स, रूफिंग स्लेट्स और कस्टमाइज्ड स्टोन उत्पाद।

देविका स्टोन सप्लायर्स:–इस कंपनी ने उन्नत प्रसंस्करण तकनीकों के माध्यम से स्लेट स्टोन बाजार में एक विशेष स्थान बनाया है। यह कई देशों में निर्यात करती है और गुणवत्ता एवं ग्राहक संतुष्टि पर ध्यान केंद्रित करती है।मुख्य उत्पाद स्लेट टाइल्स, स्लैब्स और सजावटी पत्थर।

मुकेश एक्सपोर्ट्स :– टोंक स्लेट स्टोन के प्रमुख व्यापारियों में से एक, मुकेश एक्सपोर्ट्स विभिन्न स्लेट उत्पादों के लिए एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में स्थापित हो चुकी है और खुदरा एवं थोक बाजारों दोनों में सेवाएँ प्रदान करती है। मुख्य उत्पाद स्लेट टाइल्स, ब्लॉक्स और लैंडस्केपिंग स्टोन्स।

- **टोंक स्लेट स्टोन उद्योग की चुनौतियाँ**

हालांकि टोंक स्लेट स्टोन उद्योग में विकास और लाभ की अपार संभावनाएँ हैं, फिर भी इस उद्योग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो इसकी प्रगति में बाधा डालती हैं।

1. **बुनियादी ढांचे की समस्याएँ**

- **परिवहन** :– प्रभावी परिवहन बुनियादी ढांचे की कमी कच्चे माल और तैयार उत्पादों की आवाजाही में देरी कर सकती है। खराब सड़कें और प्रमुख बाजारों से सीमित संपर्क लागत को बढ़ा सकते हैं और डिलीवरी का समय बढ़ा सकते हैं।
- **प्रसंस्करण सुविधाएँ** :– अपर्याप्त प्रसंस्करण सुविधाएँ उत्पादों की गुणवत्ता और स्थिरता को प्रभावित कर सकती हैं। कई निर्माता पुरानी मशीनरी के साथ काम करते हैं, जिससे उत्पादन क्षमता और दक्षता सीमित हो जाती है।

2. **बाजार प्रतिस्पर्धा**

घरेलू और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा:– स्लेट स्टोन उद्योग प्रतिस्पर्धात्मक है, जहाँ घरेलू निर्माताओं को अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों से मुकाबला करना पड़ता है। सस्ते आयातित उत्पादों से प्रतिस्पर्धा करना स्थानीय उत्पादकों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है, जिससे उनकी बाजार हिस्सेदारी और मूल्य निर्धारण रणनीतियाँ प्रभावित होती हैं।

गुणवत्ता का अंतर :– निम्न–गुणवत्ता वाले स्लेट उत्पादों की प्रचुरता टोंक स्लेट स्टोन की प्रतिष्ठा को कमजोर कर सकती है। उपभोक्ताओं को टोंक स्लेट के अद्वितीय लाभों के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है ताकि प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखी जा सके।

3. **पर्यावरणीय चिंताएँ**

- **सतत खनन प्रथाएँ** :– खनन प्रथाओं और उनके पर्यावरणीय प्रभावों पर बढ़ती निगरानी के कारण कंपनियों पर सतत (नेजंपदंइसम) प्रथाओं को अपनाने का दबाव है, जिसके लिए महत्वपूर्ण निवेश और परिचालन परिवर्तनों की आवश्यकता हो सकती है।
- **नियामक अनुपालन** :– खनन और प्रसंस्करण से संबंधित सख्त नियम छोटे ऑपरेटरों के लिए चुनौती बन सकते हैं, जो इन नियमों का पालन करने के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी महसूस करते हैं।

4. **कौशल की कमी**

कार्यबल प्रशिक्षण :– स्लेट स्टोन उद्योग में कारीगरी की समृद्ध परंपरा के बावजूद, श्रमिकों के लिए औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी है। इस कौशल अंतर को पाटना आधुनिक तकनीकों को अपनाने और उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है।

टोंक स्लेट स्टोन उद्योग में आपकी रुचि के लिए धन्यवाद। यह पहल टोंक जिले की समृद्ध औद्योगिक विरासत को संरक्षित करने और सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

स्थानीय कारीगरों और निर्माताओं का समर्थन करके, हम समुदायों की आजीविका में योगदान देते हैं और पारंपरिक कारीगरी को संरक्षित करते हैं। आइए हम इस अद्वितीय उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करें और टोंक जिले के कारीगरों के लिए एक समृद्ध भविष्य सुनिश्चित करें।

एक जिला एक उपज– सरसों

पंच गौरव का संक्षिप्त परिचय – सरसों प्रदेश की मुख्य तिलहनी फसल है जो कि कम लागत एवं कम पानी मे भी सफलतापूर्वक उगायी जा सकती है। सरसों का तेल खाद्य तैलों के रूप मे प्रमुखता से उपयोग किया जाता है। सरसों से तेल निकालने के पश्चात प्राप्त खल पशु आहार एवं तेल रहित खल मुर्गीयों के खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है। सरसों की तुड़ी से बिजली उत्पादन किया जा रहा है एवं तुड़ी को कम्प्रेस कर ब्रायलर में जलाने हेतु जैव ईंधन भी बनाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त सरसों के फूलों से प्राप्त नेक्टर से मधुमक्खी पालन कर अतिरिक्त आय प्राप्त की जा रही है।

"सरसों एक–फायदे अनेक"

- पंच गौरव के अन्तर्गत टोंक जिले मे सरसों की फसल का चयन
- रबी 2023–24 मे उत्पादन 521000 मैट्रिक टन
- सरसों से अनुमानित आय 3100 करोड़ रूपये
- सरसो फसल प्रयोग एवं रोजगार सृजन
  - ❖ लगभग 70 ऑयल मिल
  - ❖ सरसों तुड़ी से विधुत उत्पादन 2 कारखाने प्रत्येक 8 मेगावाट
  - ❖ सरसों तुड़ी फैक्ट्री बॉयलर ईधन हेतु गट्टे
  - ❖ सरसों तुडी ईट भट्टों मे ईधन
  - ❖ मधुमक्खी पालन

➢ जिले मे सरसों का उत्पादन बढाने हेतु प्रयास

❖ 2800 हैक्टर मे सरसों फसल प्रदर्शन आयोजित

❖ 380 क्विंटल सरसों उन्नत किस्मों का बीज कृषको को 50 प्रतिशत अनुदान

❖ सरसों की उन्नत किस्मों के 50 हजार मिनिकिट वितरण

❖ सरसों उत्पादन की उन्नत कृषि विधियों की जानकारी कृषक प्रशिक्षण एवं वाट्सअप ग्रुपो द्वारा प्रसारित

सरसों उत्पादन बढाने हेतु मुख्य बाते

- खेत की अच्छे तरीके से जुताई
- उपयुक्त तापमान पर ही बुआई करना
- उन्नत सरसों बीज किस्मों का प्रयोग
- फफुंदनाशी, कीटनाशी से बीज उपचार
- फफूँदजनित रोगो से बचाव हेतु ट्राईकोड्रमा का प्रयोग
- मिट्टी की जॉच के अनुसार जिप्सम प्रयोग
- संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग
- तेल मात्रा बढाने हेतु एसएसपी उर्वरक का प्रयोग
- 35 या इसके पश्चात पहली सिंचाई
- सफेद रोली एवं माहु का नियत्रंण
- फसल पूर्ण पकने पर ही कटाई

जिले मे उपलब्धि – सरसो फसल उत्पादन की दृष्टि से टोंक जिला राज्य में अग्रणी स्थान पर है। सरसों उत्पादन एवं इसके विभिन्न उपयोगों से जिले के लाखो लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में रोजगार मिला हुआ है। जिले की जलवायु एवं मिट्टी सरसों उत्पादन के लिये उपयुक्त है।

1. **वर्तमान स्थिति** –टोंक जिले मे प्रति वर्ष लगभग 3 लाख हैक्टर मे सरसों बुआई की जाती है। टोंक जिले मे वर्तमान मे 280980 हैक्टर मे बुआई की गई है जिससे हजारों किसानों द्वारा खेती कार्य किया जा रहा है। सरसों से तेल निकालने हेतु जिले मे 80 तेल मिल संचालित है साथ ही लगभग 5 सॉल्वेट प्लांट संचालित है। यहा से उत्पादित तेल स्वयं के ब्राण्ड नाम एवं अन्य बहुप्रतिष्ठ कम्पनीयो को आपूर्तित किया जाता है। फसल की थ्रेसिंग के बाद बची तुड़ी से बिजली बनाने

के लिये 8–8 मेगावाट के 2 प्लांट कार्यरत होने के साथ ही फेक्ट्रीयों के बॉयलर मे जलाने हेतु कम्प्रेस करके विभिन्न आकारों मे जैव ईंधन के गुट्टे बनाये जाते है। सरसों फसल उत्पादन को अधिकतम स्तर तक पहुॅचाने में कृषकों को आने वाली विभिन्न समस्याओं को दूर करने के लिये कृषि कार्मिकों एवं किसानों के प्रशिक्षण, कृषक–वैज्ञानिक संवाद आयोजन कर उनका निराकरण किया जा सकता है। अधिक से अधिक कृषको के द्वारा सरसों फसल की पैदावार की जाये इस हेतु विभिन्न तरीको द्वारा सघन प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है।

पंच गौरव सरसों फसल उत्पादन बढाने हेतु कार्य

क्र.स.	नाम गतिविधि	संख्या	व्यय प्रति ईकाई	कुल व्यय
1	पंचायत समिति स्तर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजन (प्रति प्रशिक्षण 100 कृषक)	35	35000	122500
2	पंचायत समिति स्तर पर एक दिवसीय राजिविका कृषक सखी प्रशिक्षण (प्रति प्रशिक्षण 100 महिला)	7	3500	245000
3	अधिकारी एवं कर्मचारियों हेतु राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र, सेवर, भरतपुर पर पांच दिवसीय क्षमता वर्धन प्रशिक्षण	2	187500	375000
4	जिला स्तर पर सरसों महोत्सव एंव प्रदर्शनी का आयोजन (लगभग 600 कृषक)	1	600000	600000
5	सरसों की उन्नत खेती हेतु तकनीकी साहित्य/फोल्डर	100000	3	300000
6	दीवार लेखन (प्रत्येक ग्राम पंचायत पर)	1000	1000	1000000
7	प्लेक्स बैनर/होर्डिग तहसील/पंचायत समिति/कृषि ऊपज मण्डी आदि पर	50	1000	50000
8	प्रत्येक ग्राम पचांयत पर कृषक गोष्ठी आयोजन	236	5000	1180000
9	नुक्कड़ नाटक पंचायत स्तर	236	5000	1180000
योग				**6155000**

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– अमलताश

परिचय :– अमलतास, जिसे वैज्ञानिक रूप से **Cassia fistula** के नाम से जाना जाता है, एक मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है जो फैबेसी (**Fabaceae**) परिवार से संबंधित है। यह भारत सहित दक्षिण एशिया का मूल निवासी है और अपने सुनहरे पीले फूलों के कारण गोल्डन शावर ट्री के नाम से भी प्रसिद्ध है। राजस्थान जैसे शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में यह प्रजाति अपनी अनुकूलन क्षमता के लिए जानी जाती है। टोंक जिले जैसे क्षेत्रों में इसे पंच गौरव कार्यक्रम के लिए चुना जाना इसके पर्यावरणीय और सौंदर्य मूल्यों को दर्शाता है।

अमलतास का वृक्ष सामान्यतः 10 से 20 मीटर तक ऊंचा होता है, जिसकी छाल शुरू में चिकनी और हल्के भूरे रंग की होती है, जो समय के साथ गहरी और खुरदरी हो जाती है। इसकी पत्तियाँ संयुक्त होती हैं, जिनमें 4 से 8 जोड़े छोटे पत्ते होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में, विशेष रूप से अप्रैल से जून के बीच, यह वृक्ष पीले फूलों के गुच्छों से लदा होता है, जो दूर से देखने पर किसी सुनहरे झरने का आभास देते हैं। ये फूल न केवल आकर्षक होते हैं, बल्कि मधुमक्खियों और तितलियों जैसे परागणकों को भी आकर्षित करते हैं, जिससे जैव–विविधता को बढ़ावा मिलता है।

इसके फल लंबे, बेलनाकार और गहरे भूरे रंग के होते हैं, जो 30–60 सेंटीमीटर तक बढ़ सकते हैं। इनमें बीज होते हैं, जिनका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में किया जाता है। आयुर्वेद में अमलतास के फूल, फल और छाल को औषधीय गुणों के लिए प्रयोग किया जाता है, जैसे कब्ज, त्वचा रोग और बुखार के उपचार में। पर्यावरण की दृष्टि से यह वृक्ष

वायु शुद्धिकरण में सहायक है और अपनी घनी छाया से गर्मी में राहत प्रदान करता है। कम पानी और देखभाल में भी यह आसानी से विकसित हो जाता है, जो इसे टोंक जैसे क्षेत्रों के लिए आदर्श बनाता है। इस तरह, अमलतास न केवल हरित आवरण बढ़ाने में योगदान देता है, बल्कि सांस्कृतिक और औषधीय महत्व भी रखता है।

अमलताश (Cassia fistula) प्रजाति का वानस्पतिक विवरण :– अमलताश, जिसे अंग्रेजी में "**Golden Shower Tree**" कहा जाता है, एक सुंदर और ऊंचे पेड़ की प्रजाति है जो फैबेसी (Fabaceae) परिवार से संबंधित है। इसका वैज्ञानिक नाम Cassia fistula है। यह पेड़ मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है, और विशेष रूप से भारत, श्रीलंका, बांगलादेश, और दक्षिण–पूर्व एशिया में व्यापक रूप से उगता है।

अमलताश की सबसे प्रमुख विशेषता इसका फूल और फल है। इसके फूल छोटे, पीले रंग के, और गुच्छों में होते हैं। फूलों का आकार लगभग 2 से 3 सेंटीमीटर होता है और ये गर्मी के मौसम में खिलते हैं, जो पेड़ को आकर्षक रूप से सजाते हैं। फूलों के गुच्छे लगभग 30 से 40 सेंटीमीटर तक लंबे होते हैं।

फल छोटे, लम्बे और भूरे रंग के होते हैं जो लगभग 30 सेंटीमीटर लंबी फलियों के रूप में होते हैं। इनमें बीज होते हैं, जो चिकने और काले रंग के होते हैं। फली में लगे बीज का उपयोग औषधि बनाने में होता है। अमलताश का फल और उसकी छाल विभिन्न आयुर्वेदिक चिकित्सा में उपयोगी माने जाते हैं, जैसे कि यह पेट की समस्याओं, बुखार और अन्य रोगों में सहायक होता है।

अमलताश का वृक्ष जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील होता है, और इसे कम पानी में भी उगाया जा सकता है, जिससे यह एक लोकप्रिय बागवानी और छायादार वृक्ष बन चुका है। इसके अलावा, इसकी लकड़ी भी टिकाऊ और मजबूत होती है, जिसका उपयोग विभिन्न निर्माण कार्यों में किया जाता है।

अमलताश प्रजाति की जलवायु और भूमि :– अमलताश (Cassia fistula) एक उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में उगने वाली प्रजाति है, जो गर्म और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह से उगती है। यह पेड़ खासतौर पर ऐसे क्षेत्रों में पनपता है, जहाँ वर्षा का स्तर औसत या थोड़ी कम होती है। अमलताश को 25°C से 35°C तक के तापमान में सबसे अच्छा विकास होता है। हालांकि, यह अत्यधिक ठंडी या शीतल जलवायु

में नहीं पनपता, और 10°C से कम तापमान पर इसकी वृद्धि धीमी हो जाती है या पेड़ मर सकता है।

अमलताश को वर्षा की अच्छी अवधि पसंद होती है, लेकिन यह कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी जीवित रह सकता है। इसे सूखा सहने की क्षमता है, जिससे यह शुष्क मौसम में भी जीवित रहता है। इसके लिए आदर्श जलवायु वह होती है, जिसमें अच्छी वर्षा और गर्मी हो, साथ ही वातावरण में नमी का संतुलन भी बना रहे।

भूमि की दृष्टि से, अमलताश सामान्यतरू हल्की और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी में उगता है। यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में पनप सकता है, जैसे कि रेतीली, बलुई, या दोमट मिट्टी। हालांकि, इसे ज्यादा भारी और जलजमाव वाली मिट्टी में उगाने से बचना चाहिए, क्योंकि ऐसी मिट्टी में जड़ सड़ने की समस्या हो सकती है।

अमलताश को उगाने के लिए pH स्तर 6 से 8 के बीच की मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। यह पेड़ लवणीय मिट्टी में भी कुछ हद तक सहनशील होता है, लेकिन अत्यधिक लवणीयता इसे प्रभावित कर सकती है। इस प्रजाति के विकास के लिए आदर्श परिस्थितियाँ वो हैं, जहां जलवायु उष्ण और शुष्क हो और मिट्टी अच्छी जल निकासी वाली हो।

वृक्ष संवर्धन व पौध तैयार करना :– अमलताश (Cassia fistula) एक सुंदर और उपयोगी पेड़ है, जिसका वृक्ष संवर्धन उचित देखभाल और सही तकनीकों के साथ किया जा सकता है। यह पेड़ आमतौर पर बागवानी, सजावट, और औषधीय उद्देश्यों के लिए उगाया जाता है। इसके संवर्धन के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम निम्नलिखित हैं:-

- **बीज चयन और छटाई:**– अमलताश का संवर्धन मुख्यतः बीज द्वारा किया जाता है। इसके बीजों का आकार बड़ा और मोटा होता है, जो अक्सर भूरे या काले रंग के होते हैं। बीजों को रोपने से पहले उन्हें पानी में 24 घंटे भिगोकर रखा जाता है, जिससे उनकी जमावट प्रक्रिया तेज होती है और वे जल्दी अंकुरित होते हैं।
- **मिट्टी और स्थान का चयन:**– अमलताश के पौधों के लिए हल्की, अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी उपयुक्त होती है। रेतीली और दोमट मिट्टी में इसकी वृद्धि बेहतर होती है। इसे ऐसे स्थान पर उगाना चाहिए जहाँ पर्याप्त सूरज की रोशनी मिलती हो, क्योंकि यह पेड़ धूप में अच्छे से विकसित होता है।
- **बीज बोना और रोपाई:**– बीज को 2 से 3 सेंटीमीटर की गहराई में बोया जाता है। अगर बीजों को पहले से गमले या छोटे बर्तन में बोया जाए, तो उन्हें धीरे–धीरे बड़े गमलों में स्थानांतरित किया जा सकता है जब पौधे कुछ बड़ा हो जाएं। यदि सीधे

जमीन में बोना हो, तो रोपाई से पहले स्थान को अच्छी तरह से तैयार किया जाता है, ताकि पौधे का विकास न रुकें।

- **सिंचाई और देखभाल:**–रोपण के बाद, अमलताश के पौधों को नियमित रूप से पानी देना चाहिए, खासकर गर्मी के महीनों में। हालांकि, अत्यधिक सिंचाई से बचना चाहिए, क्योंकि यह जड़ सड़ने का कारण बन सकता है। पौधों को समय–समय पर खाद देना भी फायदेमंद होता है, जिससे पौधों की वृद्धि तेज होती है।
- **प्रत्यारोपण और रखरखाव:**– जैसे–जैसे पौधे बढ़ते हैं, उन्हें स्थिर और मजबूत बनाए रखने के लिए उचित छंटाई और आकार में बनाए रखना आवश्यक होता है। इस पेड़ को विशेष रूप से गर्मियों में सूर्य की सीधी रोशनी की आवश्यकता होती है, जिससे इसे पर्याप्त धूप में रखा जाता है।

अमलताश का वृक्ष संवर्धन सरल और प्रभावी है, अगर इसे सही तरीके से किया जाए। यह पेड़ न केवल अपने सुंदर पीले फूलों के लिए जाना जाता है, बल्कि इसके फल, लकड़ी, और औषधीय गुण भी महत्वपूर्ण होते हैं।

वृक्षारोपणः– सर्वप्रथम अप्रैल–मई माह में पौधारोपण स्थल 45×45×45 सें. मी. माप के गड्ढे खोद लेना चाहिए ताकि तेज धुप की गर्मी के हानिकारक कीटों के अंडे एवं प्यूपा नष्ट हो जाएँ। यदि वृक्षारोपण मेड़ों पर किया जाना है तो गड्ढे 4×4 मी. की दूरी पर तथा कृषि वानिकी व अही उत्पाद प्राप्त करने हेतु 5×5 मीटर व इससे अधिक दूरी पर सूविधानुसार बनाए जा सकते हैं। प्रति गड्ढे में 5-6 कि. ग्रा. जैविक खाद, 20&25 ग्राम कीटनाशक, 10 ग्राम यूरिया, 20 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 20 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश, 1-2 किलो नीम की खली तथा उपजाऊ मिट्टी मिलाकर गड्ढे को भर देना चाहिए।

मानसून की प्रथम वर्षा होने पर 8&10 माह की आयु के स्वस्थ्य व निरोग पौधों को उपर्युक्त विधि से तैयार किए गए गड्ढे में लगा देना चाहिए। पौध को लंबे समय तक रोकने पर उसकी मूसला जड़ अधिक लंबी हो जाती है और फिर जड़ को निकलना मुश्किल हो जाता है। पालीथीन थैलियों में तैयार किए गए पौधों के पौधरोपण करते समय पालीथीन थैली पौधे से अलग कर पौधे को गड्ढे में सीधा रखना चाहिए तथा मिट्टी चढ़ाकर पैरों से भलीभांति दबा देना चाहिए तथा सिंचाई कर देनी चाहिएद्य पौधारोपण स्थल में पानी का अधिक समय तक भराव नहीं होना चाहिए अन्यथा पौधा नष्ट हो सकता है।

वृक्षो का रख–रखाव :– सामान्यत वृक्षारोपण के लगभग 3- 4 वर्ष के बाद वृक्ष में फल आने लगते हैंद्य तब तक पौधों के रखरखाव का विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। रोपण से एक माह के भीतर निराई करना आवश्यक है। इस समय पौध के चारों 50 सें.

मी. के घेरे से समस्त खरपतवार, घास आदि के जड़ से निकाल देना चाहिए। उसके लगभग एक माह बाद दूसरी निराई तथा आवश्यकता पड़ने पर तीसरी निराई अक्टूबर माह के अंत तक करना आवश्यक है। इसी समय पौधे के चारों ओर 50 सें. मी. के घेरे में निराई व गुड़ाई करते हुए थाला बनाना आवश्यक है तथा आवश्यकता पड़ने पर वृक्षारोपण में सिंचाई भी करनी चाहिए।

पौधरोपण काल एवं इसकी दो वर्ष की अवधि तक पौधों अच्छी वृद्धि के लिए समय–समय पर रासायनिक व गोबर की देशी खाद देना आवश्यक है। पौधारोपण के पूर्व एक गड्ढे में यूरिया, सुपर फास्फेट एवं पोटाश, प्रत्येक की लगभग 5–10 ग्राम मात्रा डालनी चाहिए तथा प्रथम निराई के समय डी. ए. पी. 10 ग्राम मात्रा का डालनी चाहिए तथा प्रथम निराई के समय 10 ग्राम सुपर फास्फेट देना चाहिए द्वितीय वर्ष में जुलाई– अगस्त में गोबर की सड़ी खाद व कीटनाशक मिलाकर मिट्टी में मिला चाहिए।

अमलताश के पौधों की वृद्धि पर रासायनिक तत्वों जैसे पोटैशियम व जस्ते की कमी का असर पड़ता है। पोटैशियम की कमी होने पर पत्तियों के किनारे व सिरों पर हरे पीले धब्बे उभर आते हैं तथा पत्तियाँ धीरे– धीरे मरने लगती हैं। जिसे नेकरोसिस कहते हैं तथा पत्तियाँ धीरे–धीरे मरने लगती हैं। जोसे नेकरोसिस कहते हैं। जबकि जस्ते की कमी होने से तने से रेसिन अधिक मात्रा में निकलने लगता है। पत्तियों के किनारे पर पीले धब्बे स्पष्ट दिखने लगते हैं तथा पत्तियाँ पुरानी पड़ने पर तेजी से गिरने लगती हैं। अतः इन तत्वों की कमी के लक्षण स्पष्ट होने पर तुरंत इनकी आपूर्ति आवश्यक है।

अमलताश प्रजाति के उपज और उत्पादन :– अमलताश (Cassia fistul) एक उष्णकटिबंधीय पेड़ है, जिसे विशेष रूप से इसके सुंदर पीले फूलों, फल, और औषधीय गुणों के लिए उगाया जाता है। इसका उत्पादन मुख्य रूप से बागवानी, लकड़ी, औषधियों, और पर्यावरणीय उद्देश्यों के लिए किया जाता है। इस प्रजाति के उपज और उत्पादन में कुछ मुख्य पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है।

- **फूलों की उपज** – अमलताश के पेड़ गर्मी के मौसम में अपने आकर्षक पीले रंग के फूलों से सजते हैं। ये फूल न केवल पर्यावरणीय सौंदर्य बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, बल्कि कई स्थानों पर औषधीय उपयोग के लिए भी उगाए जाते हैं। एक पेड़ में प्रति वर्ष हजारों फूल उग सकते हैं, जो एकत्रित करके विभिन्न उत्पादों के निर्माण में इस्तेमाल किए जाते हैं, जैसे कि प्राकृतिक रंग और सजावट के सामान।
- **फल और बीज**– अमलताश के फल लम्बे और भूरे रंग के होते हैं, जिनमें काले और चिकने बीज होते हैं। फलियाँ प्रत्येक वर्ष फूटती हैं और कई महीनों तक पेड़ पर लटकी रहती हैं। इन बीजों का उपयोग औषधीय उपचार में किया जाता है, जैसे कि दस्त, बुखार, और पेट की समस्याओं के लिए। बीजों से तेल भी निकाला जाता है,

जो औद्योगिक उपयोग में आता है। एक पेड़ से प्रति वर्ष 10–15 किलो तक बीज एकत्रित किए जा सकते हैं।

- **लकड़ी** – अमलताश की लकड़ी भी मजबूत और टिकाऊ होती है, जिसे निर्माण, फर्नीचर, और विभिन्न घरेलू वस्त्रों के लिए उपयोग किया जाता है। इसकी लकड़ी की आपूर्ति स्थानीय स्तर पर की जाती है, और इसकी वृद्धि के लिए हर 3 से 4 साल में पेड़ की छंटाई की जाती है, ताकि इसका आकार और लकड़ी की गुणवत्ता बेहतर हो सके।
- **औषधीय उत्पाद** – अमलताश की छाल, पत्तियां, और फल औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं। इनका उपयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा में किया जाता है, जैसे कि आंतों की सफाई, बुखार कम करने, और त्वचा संबंधी रोगों के उपचार में। इस प्रकार, अमलताश का उत्पादन केवल बागवानी और सुंदरता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह चिकित्सा उद्योग में भी अहम भूमिका निभाता है।

अमलताश की प्रजाति का उपज और उत्पादन विविधता से भरपूर है, और इसके विभिन्न उपयोगों के कारण यह आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसके फूल, फल, बीज और लकड़ी का उत्पादन इसे एक मूल्यवान वृक्ष बनाता है, जिसे कई उद्देश्यों के लिए उगाया जाता है।

भण्डारण :– अमलताश (Cassia fistula) की विभिन्न भागों का भण्डारण उचित तरीके से किया जाना चाहिए ताकि उनकी गुणवत्ता और उपयोगिता बनी रहे। इस प्रजाति के प्रमुख भण्डारण योग्य भागों में इसके बीज, फूल, और फल आते हैं, जिनका विभिन्न औद्योगिक और औषधीय उपयोग किया जाता है। भण्डारण की प्रक्रिया के दौरान कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

- **बीजों का भण्डारण** :– अमलताश के बीजों को संरक्षित करने के लिए उन्हें सूखा और ठंडी जगह पर रखा जाना चाहिए। बीजों को रखने से पहले 24 घंटे पानी में भिगोने की प्रक्रिया के बाद, उन्हें छायादार स्थान पर सुखाना चाहिए। इसके बाद बीजों को एयरटाइट कंटेनर में या कपड़े के बैग में भरकर ठंडी और सूखी जगह पर संग्रहित किया जा सकता है। बीजों को अधिक समय तक सुरक्षित रखने के लिए उन्हें अच्छे से जांचना चाहिए कि वे संक्रमित या सड़े न हों।

- **फूलों का भण्डारण** :– अमलताश के फूलों को उनकी रंगत और खुशबू बनाए रखने के लिए सुखाना चाहिए। फूलों को ताजे रखने के लिए, उन्हें प्राकृतिक तरीके से हवा में सुखाया जाता है या फिर कम तापमान पर डिहाइड्रेटर में सुखाया जा सकता है। सुखाए हुए फूलों को कागज के बैग में या जार में रखा जा सकता है, ताकि वे टूटें नहीं और अपनी गुणवत्ता बनाए रखें।
- **फलों का भण्डारण** :– अमलताश के फल लम्बे समय तक सुरक्षित नहीं रहते, इसलिए इन्हें जल्दी से उपयोग करना चाहिए। ताजे फलियों को ठंडी और सूखी जगह पर रखा जा सकता है, लेकिन अगर उन्हें लंबे समय तक संग्रहित करना हो, तो उन्हें सुखाकर या सुखाने के बाद पैक करके रखा जाता है। सुखाए गए फलियों को किसी भी प्रकार के नमी और ऊंचे तापमान से बचाना चाहिए।

औषधीय उपयोग के लिए भण्डारणरू अमलताश के औषधीय भागों जैसे कि छाल, पत्तियां, और फलियों का भण्डारण कांच के जार या धातु के कंटेनरों में किया जाता है। इन्हें भी सूखे और ठंडे स्थानों पर रखना चाहिए, ताकि वे अपनी औषधीय गुणवत्ता बनाए रखें। इनका भण्डारण कम से कम 6 महीने तक किया जा सकता है, बशर्ते इन्हें नमी, गर्मी और धूप से दूर रखा जाए।

अमलताश के विभिन्न हिस्सों का भण्डारण यदि सही तरीके से किया जाए तो उनका दीर्घकालिक उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है। उचित भण्डारण से न केवल इनके उपयोगी गुण बनाए रहते हैं, बल्कि यह उत्पादों की गुणवत्ता को भी बनाए रखने में मदद करता है।

अमलताश प्रजाति के बीजों का विपणन :–अमलताश (Cassia fistula), जिसे ष्गोल्डन शावर ट्रीष् के नाम से भी जाना जाता है, एक प्रसिद्ध उष्णकटिबंधीय वृक्ष है। यह अपने सुंदर पीले फूलों और औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है। इस पेड़ के बीजों का विपणन एक लाभकारी और स्थायी व्यवसाय हो सकता है, क्योंकि इसके बीज विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग किए जाते हैं, जैसे औषधीय उत्पादों, बागवानी, और पर्यावरणीय परियोजनाओं में। इस लेख में हम अमलताश के बीजों के विपणन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

1. अमलताश के बीजों का महत्व :– अमलताश के बीजों का उपयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा में प्रमुख रूप से किया जाता है। बीजों में ऐसे रासायनिक तत्व होते हैं, जो पेट की समस्याओं, दस्त, बुखार, और आंतों की सफाई में सहायक होते हैं। इसके अलावा, अमलताश के बीजों से तेल भी निकाला जाता है, जिसका उपयोग औद्योगिक उत्पादों और सौंदर्य प्रसाधनों में किया जाता है। अमलताश के बीजों का उपयोग केवल औषधीय उद्देश्य

तक ही सीमित नहीं है, बल्कि ये बागवानी और पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके फूल और छांव के कारण इसे शहरी हरित परियोजनाओं में बढ़ावा दिया जाता है। इस प्रकार, अमलताश के बीजों का विपणन विविध उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जो इसे एक आकर्षक व्यावसायिक अवसर बनाता है।

2. अमलताश बीजों का विपणन बाजार

- **आयुर्वेदिक और हर्बल उत्पाद उद्योग** :– अमलताश के बीजों का प्रमुख उपयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा में किया जाता है। इसके बीजों से तैयार औषधियाँ विभिन्न बीमारियों के इलाज में सहायक होती हैं। जैसे–दस्त और आंतों के संक्रमण को ठीक करने के लिए ,बुखार और सर्दी–जुकाम में राहत के लिए ,त्वचा की समस्याओं को ठीक करने के लिए इसके अतिरिक्त, अमलताश के बीजों से निकाले गए तेल का उपयोग सौंदर्य प्रसाधनों में भी किया जाता है, जैसे कि त्वचा को नरम और चमकदार बनाने के लिए।
- **बागवानी और हरित परियोजनाएँ** :–अमलताश का पेड़ अपनी सुंदरता और छांव के लिए प्रसिद्ध है। यह बड़े बागों, सार्वजनिक पार्कों, शहरी क्षेत्रों, और सड़कों पर सजावट और हरित वृक्षारोपण के लिए उपयोग किया जाता है। इसके पीले फूल पर्यावरणीय सौंदर्य को बढ़ाते हैं और इसके छायादार गुण शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए लाभकारी होते हैं। इसके अलावा, अमलताश के बीजों का उपयोग पर्यावरणीय परियोजनाओं, जैसे कि वन्यजीव संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण में भी किया जा सकता है। इसका उपयोग भूमि पुनर्वास और जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए भी किया जा सकता है। बागवानी दुकानों, पार्क निर्माण कंपनियों और हरित परियोजना संगठनों के लिए बीजों की आपूर्ति करने का एक अच्छा अवसर हो सकता है।
- **कृषि और वृक्षारोपण उद्योग** :– अमलताश एक कठोर और शुष्क परिस्थितियों में भी बढ़ने वाला वृक्ष है, जो इसे कृषि और वृक्षारोपण उद्योग में एक महत्वपूर्ण संसाधन बनाता है। किसानों को इसे उगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, क्योंकि यह कम पानी की आवश्यकता के बावजूद जल्दी बढ़ता है। इसके बीजों का विपणन किसानों और कृषि उत्पादकों के लिए भी किया जा सकता है। इसके अलावा, अमलताश की लकड़ी भी मजबूत और टिकाऊ होती है, जिसका उपयोग निर्माण उद्योग में होता है।

- **निर्यात अवसर** :– अमलताश के बीजों का एक और विपणन चौनल अंतर्राष्ट्रीय बाजार है। कई देशों में अमलताश के औषधीय गुणों की उच्च मांग है, और इसका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में किया जाता है। विशेष रूप से दक्षिण–पूर्व एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व के देशों में इस पेड़ के बीजों का उपयोग बहुतायत से किया जाता है। भारत और अन्य देशों से अमलताश के बीजों का निर्यात करके एक स्थिर और बढ़ते हुए बाजार को टार्गेट किया जा सकता है। इसके लिए निर्यात लाइसेंस और व्यापारिक समझौतों की आवश्यकता होगी, लेकिन इससे अच्छे लाभ की संभावना है।

3. विपणन रणनीतियाँ

अमलताश के बीजों का विपणन करने के लिए कुछ रणनीतियाँ हैं:–

- **ऑनलाइन विपणन** :– ऑनलाइन विपणन आजकल तेजी से बढ़ रहा है और इसके माध्यम से अमलताश के बीजों की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बिक्री को बढ़ावा दिया जा सकता है। विभिन्न ई–कॉमर्स प्लेटफार्मों जैसे कि अमेजन, फ्लिपकार्ट, और स्थानीय ऑनलाइन बागवानी स्टोरों पर बीजों को सूचीबद्ध किया जा सकता है। सोशल मीडिया और डिजिटल मार्केटिंग का उपयोग करके उत्पाद के लाभ और विशेषताओं को लोगों तक पहुँचाया जा सकता है।
- **कृषि सहकारी समितियाँ और नेटवर्क** :– कृषि सहकारी समितियाँ और किसान संघ भी अमलताश के बीजों के विपणन के लिए एक आदर्श चौनल हो सकते हैं। किसानों और बागवानी उत्पादकों को इन बीजों के लाभ के बारे में जागरूक किया जा सकता है। इसके अलावा, खेती और बागवानी में काम करने वाले संगठनों के माध्यम से बीजों की आपूर्ति की जा सकती है।
- **स्थानीय विपणन और व्यापार** :– स्थानीय बागवानी दुकानों, कृषि बाजारों और हर्बल स्टोरों के माध्यम से अमलताश के बीजों का विपणन किया जा सकता है। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में जहां बागवानी और हरित परियोजनाओं में रुचि बढ़ी है, वहाँ पर इन बीजों की मांग अधिक हो सकती है।

4. निष्कर्ष

अमलताश के बीजों का विपणन एक स्थिर और विविध व्यापार हो सकता है, जो विभिन्न उद्योगों को लाभ प्रदान कर सकता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा, बागवानी, पर्यावरणीय परियोजनाएँ, और कृषि उद्योग में इसके उपयोग के बढ़ते अवसरों के साथ, अमलताश के

बीजों का विपणन एक लाभकारी प्रयास साबित हो सकता है। विपणन के लिए विभिन्न रणनीतियाँ, जैसे कि ऑनलाइन विपणन, कृषि नेटवर्क, और स्थानीय व्यापार, इसे एक विस्तृत बाजार में पहुंचाने के लिए प्रभावी साबित हो सकती हैं। इस प्रकार, अमलताश के बीजों का विपणन न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से लाभकारी है, बल्कि यह पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी लाभों के कारण समाज के लिए भी महत्वपूर्ण है।

- **अमलताश का सरल औषधिय उपयोगः–**अमलताश (Cassia fistula) एक अत्यंत गुणकारी पेड़ है, जिसे पारंपरिक औषधियों में उपयोग के लिए जाना जाता है। इसके विभिन्न भागों जैसे पत्तियाँ, छाल, फूल, और बीज औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। अमलताश का उपयोग कई रोगों के इलाज के लिए किया जाता है, विशेष रूप से पेट संबंधी समस्याओं, त्वचा रोगों, और बुखार में।
- **पेट की समस्याओं के उपचार में:–** अमलताश के फल और बीज पारंपरिक रूप से कब्ज और आंतों की समस्याओं के इलाज में उपयोग किए जाते हैं। इसके बीजों में लक्सेटिव (दस्त लाने वाला) गुण होते हैं, जो पेट की सफाई करते हैं और शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालते हैं। कब्ज के इलाज के लिए, अमलताश के फल का सेवन किया जाता है। इसके फल को सुखाकर उसका चूर्ण तैयार किया जाता है, जिसे एक छोटे से गिलास पानी के साथ लिया जाता है।
- **बुखार और सूजन में:–**अमलताश के फूल और पत्तियों का उपयोग बुखार और सूजन को कम करने के लिए किया जाता है। इसके फूलों को उबालकर उसका काढ़ा तैयार किया जाता है, जो शरीर में गर्मी को कम करता है और बुखार को उतारने में मदद करता है। यह काढ़ा शरीर में सूजन को भी कम करता है और संक्रमण के खिलाफ प्रभावी होता है।
- **त्वचा रोगों के लिए :–**अमलताश की पत्तियाँ और छाल त्वचा रोगों के इलाज में भी उपयोगी हैं। इसके पत्तियों का पेस्ट बनाकर इसे त्वचा पर लगाया जाता है, जो फोड़े–फुंसी, एक्जिमा और अन्य त्वचा संक्रमणों को ठीक करने में मदद करता है। इसके अलावा, अमलताश के फूलों का उपयोग भी त्वचा की चमक को बढ़ाने के लिए किया जाता है।
- **सिरदर्द और तनाव में:–**अमलताश के पत्तों का उपयोग सिरदर्द और मानसिक तनाव के उपचार में भी किया जाता है। इसके पत्तों को उबालकर उनका पानी सिर पर हलके से मालिश करने से सिरदर्द में राहत मिलती है और मानसिक शांति प्राप्त होती है।

इस प्रकार, अमलताश एक बहुपरकारी औषधि है जिसका सरल उपयोग विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के इलाज में किया जा सकता है। यह प्राकृतिक उपचार के रूप में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एक जिला एक खेल - एथलेटिक्स

टोंक जिले का इतिहास खेलों के क्षेत्र में हमेशा से गौरवपूर्ण रहा है, टोंक के खिलाड़ियों ने कई खेलों में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर तक अपना प्रदर्शन द्वारा जिले व राज्य का नाम रोशन किया है। टोंक जिले के खेल क्षेत्र में एथलेटिक्स खेल का विशेष स्थान रहा है, विगत 40 से अधिक वर्षों से जिला एथलेटिक्स टोंक लग ातार एथलेटिक्स खिलाड़ियों के हित में कार्य कर रहा है साथ ही संघ ने प्रत्येक वर्ष सर्वाधिक जिला स्तर प्रतियोगिता के आयोजन के माध्यम से योग्य एवं श्रेष्ठ खिलाड़ियों को मंच प्रदान करने का काम किया है। इस हेतु एथलेटिक्स खेल का जिले में हमेशा एक विशेष स्थान रहा है।

हाल ही राजस्थान सरकार द्वारा शुरू की गई पंच गौरव योजना में एक अंग के रूप में खेलों को शामिल किया जाना खेलो के प्रति सरकार की गंभीरता को दर्शाता है। इसी क्रम में टोंक जिले में पंच गौरव योजना के तहत एक जिला एक खेल में एथलेटिक्स को शामिल किया गया है। एथलेटिक्स में टोंक के खिलाड़ियों ने लगातार अपने प्रदर्शन को बढ़ावा दिया है। पिछले कुछ वर्षों में टोंक के एथलीट्स ने विभिन्न उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की है, लगातार विगत वर्षों से टोंक के एथलीट्स राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में राज्य का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं तथा पदक भी प्राप्त कर रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप कई एथलीट्स ने अपने प्रदर्शन के आधार पर राजकीय सेवाओं में भी नियुक्तियां प्राप्त की है।

जिले में एथलेटिक्स की कई प्रतियोगिताओं का आयोजन जिला एथलेटिक संघ के माध्यम से प्रत्येक वर्ष लगातार किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप एथलीट्स को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए अनेकों अवसर प्राप्त हो रहे हैं। इससे एथलीट्स को न केवल अधिक अवसर प्राप्त हो रहे हैं बल्कि नए एथलीट्स भी अपना प्रयास कर पा रहे है, और आगे बढ़

रहे हैं। पूर्व में एथलीट्स को सदैव अभ्यास हेतु आवश्यक आधारभूत संसाधनों के अभाव में जिले से बाहर स्थित प्रशिक्षण केंद्रों पर जाने के लिए विवश होना पड़ता था, इसके अलावा प्रशिक्षकों के अभाव में खिलाड़ियों को खेल उपकरण भी उपलब्ध नहीं हो पाते हैं।

एक जिला एक खेल योजना में जिला मुख्यालय पर आधारभूत खेल संसाधन तथा स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण की व्यवस्था उपलब्ध हो पाने पर खिलाड़ियों के लिए उनके क्षेत्रीय स्थानों पर ही अच्छी उपलब्धियां प्राप्त करने में सुगमता होगी। साथ ही अब मुख्यालय पर स्थित खेल स्टेडियम में वर्तमान में सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक का निर्माण कार्य प्रगति पर है जिसमें क्षेत्रीय विधायक एवं नगर परिषद टोंक के सहयोग से निर्माण कराया जा रहा है, जो कि एथलेटिक्स के स्वर्णिम समय का निर्माण में भी एक निर्णायक कड़ी सिद्ध होगा। इस ट्रैक का निर्माण होने से आने वाले समय पर एथलीट्स को स्थानीय स्तर पर ही सिंथेटिक ट्रैक की उपलब्धता होने से अभ्यास हेतु अन्य स्थानों पर नहीं जाना पड़ेगा। साथ ही सभी वंचित वर्गों के खिलाड़ियों के लिए भी सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

एक जिला एक खेल योजना के माध्यम से आने वाले समय में जो भी व्यवस्थाएं खिलाड़ियों के लिए सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जानी हैं उनका लाभ भी एथलीट्स को आगे बढ़ाने में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगा।

हम लगातार देख रहे हैं की खेलों में व्यवसायीकरण बढ़ रहा है और कई खेलों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को अनेकों पुरस्कार व सुविधा, संसाधनों के माध्यम से प्रोत्साहित भी किया जा रहा है।

एक खिलाड़ी का अपने प्रदर्शन को उपलब्ध करना ही लक्ष्य होना चाहिए। खेल एक प्रकार का कौशल व तपस्या है जिसे संयम, साहस व सदभाव से प्राप्त करना होता है। इस चुनौती को पूर्ण करने हेतु अनवरत परिश्रम करे और पैर जमीन पर रख कर आगे बढ़ते रहे तो निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है। वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करने वाले कुछ एथलीट्स के नाम निम्नानुसार हैं :–

1. **धर्मवीर चौधरी** – राष्ट्रीय ओपन एथलेटिक्स प्रतियोगिता, राष्ट्रीय अंडर 23 एथलेटिक्स प्रतियोगिता में पदक विजेता तथा वर्तमान में भारतीय सेना में हवलदार के पद पर कार्यरत।
2. **नरेश चोपड़ा** – राष्ट्रीय जूनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता, राष्ट्रीय क्रॉस कंट्री प्रतियोगिता में पदक विजेता तथा वर्तमान में भारतीय नौसेना में पेटी ऑफिसर रैंक पर कार्यरत।
3. **रोहित चौधरी** – राष्ट्रीय जूनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता, वेस्ट जोन जूनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता में पदक विजेता।
4. **रोहित बंसीवाल** – राष्ट्रीय क्रॉस कंट्री प्रतियोगिता में टीम इवेंट में तथा वेस्ट जोन जूनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता में पदक विजेता।
5. **बलराम शर्मा** – वेस्ट जोन जूनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता में पदक विजेता तथा राष्ट्रीय जूनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता में भाग लिया। वर्तमान में भारतीय सेना में अग्निवीर के पद पर कार्यरत।
6. **दीपक गुर्जर** – राष्ट्रीय अंडर 23 एथलेटिक्स प्रतियोगिता तथा ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी एथलेटिक्स प्रतियोगिता में पदक विजेता।

एक जिला एक पर्यटन स्थलः–डिग्गी कल्याणजी मंदिर

श्री कल्याण मंदिर को डिग्गी कल्याण के नाम से भी जाना जाता है,श्री जी राजस्थान के टोंक जिले के मालपुरा तहसील के डिग्गी कस्बे में एक मदिंर है । कल्याण जी भगवान विष्णु के अवतार हैं। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण 5,600 साल पहले राजा डिग्व ने करवाया था।

इतिहास

कहावत के अनुसार, एक बार उर्वशी (अप्सरा) देव इंद्र के दरबार में नृत्य कर रही थी। नृत्य प्रदर्शन के दौरान वह हंस पडी और इसलिए देव इंद्र ने उसे दडिंत किया। दरबार में इस आचार–व्यवहार के उल्लंघन के कारण इंद्र ने उसे इन्द्रलोक से निष्कासित करके दडिंत किया और उसे 12 वर्षों तक मृत्युलोक (पृथ्वी) पर रहने को कहा।

वह सप्त ऋर्षि के आश्रम में आई और वहां बडी श्रद्धा से सेवा की। उसकी ऐसी सेवा देखकर ऋर्षि ने उससे मनोकामना पूछी। उसने अपनी कहानी सुनाई और इंद्रलोक जाने की इच्छा जताई। तब ऋर्षि ने उसे ढूँढाड प्रदेश में राजा डिग्व के पास जाकर रहने को कहा। ऋर्षि ने उसे आश्वासन दिया कक उसकी मनोकामना पूरी होगी।

वह वहाँ जाकर चंद्रगिरी की पहाडी पर रहने लगी जो राजा डिग्व के इलाके में थी। पहाडी के ठीक नीचे राजा डिग्व का एक सुदंर बगीचा था। वह रात में एक सुदंर घोडे के रूप में वहाँ जाती थी। राजा ने इस घोडे क पकडने का आदेश दिया। सौभाग्य से, राजा ने खुद उसे बगीचे में पाया और उसे पकडने के लिए उसका पीछा किया। वह फिर से पहाडी पर गई और अपने अप्सरा रूप में आ गई। उसकी सुदंरता को देखकर राजा आकर्षित हो गया और उसे अपने महल में उसके साथ रहने के लिए कहा। उसने उसे अप्सरा होने और उसकी सजा के बारे में अपनी कहानी सुनाई। उसने यह भी कहा कि वह अपनी सजा पूरी होने के बाद इंद्रलोक चली जाएगी। वह तब तक वहां रह सकती है जब तक इंद्र उसे लेने

नहीं आते। उसने उससे यह भी कहा कि अगर वह इंद्र से उसकी रक्षा नहीं कर सका तो वह उसे श्राप दे देगी।

समय आने पर इंद्र उसे लेने आए, राजा और इंद्र के बीच युद्ध शुरू हो गया। यह बहुत लंबा चला और कोई नतीजा नहीं निकला। तब इंद्र ने भगवान विष्णु की मदद ली और राजा को हरा दिया। तब उर्वशी ने राजा को कुष्ठ रोग का श्राप दे दिया। भगवान विष्णु ने राजा को उसके शापित शरीर से छुटकारा पाने का उपाय बताया। उन्होंने राजा से कहा कि वह समुद्र तट पर जाकर प्रतीक्षा करे। वहां भगवान विष्णु की मूर्ति समुद्र में तैरती हुई आएगी। मूर्ति को देखते ही उसका श्राप खत्म हो जाएगा।

उसने वैसा ही किया। वह समुद्र तट के पास रुक गया और वहीं प्रतीक्षा करने लगा। कुछ समय बाद उसने समुद्र तट के पास मूर्ति को तैरते हुए देखा। उसी समय, एक व्यापारी भी परेशानी में था और उसी तट पर था।जब दोनों को मूर्ति के दर्शन हुए, तो उनकी समस्या तुरंत हल हो गई। अब समस्या यह थी कि मूर्ति को अपने साथ कौन ले जाए। तभी एक आकाशवाणी हुई जिसमें कहा गया था ''जो व्यक्ति घोड़ो के स्थान पर रहकर मूर्ति को रथ में खींचने में सक्षम होगा, वह मूर्ति को अपने साथ ले जा सकता है''। व्यापारी ने बहुत प्रयास किया लेकिन रथ नहीं खींच सका। राजा ने रथ खींचा और मूर्ति को अपने साथ ले गया। एक बार जब वह उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ इंद्र के साथ युद्ध हुआ था, तो रथ वहीं रुक गया।

भगवान के आदेशानुसार विश्वकर्माजी ने एक ही रात्री में मंदिर, गर्भगृह का निर्माण किया। भगवान की प्रतिमा आज भी उसी गर्भगृह में विराजमान हैं और विधि–विधान से मूर्ति स्थापित की। तब से यह मंदिर प्रसिद्ध है।

श्री कल्याणजी मंदिर पर संक्षिप्त जानकारी :– श्री कल्याणजी स्वयं भगवान विष्णु हैं। हिंदू देवताओं की त्रय में, विष्णु ब्रह्मा की रचना को तब तक बनाए रखते हैं जब तक कि शंकर अंततः इसे नष्ट नहीं कर देते। इस मंदिर में विष्णु स्वयं कल्याण जी के रूप में विराजमान हैं।मूर्ति सफेद संगमरमर की है।इसमें चार भुजाएँ हैं। मूर्ति की सुंदरता आकर्षक और मनमोहक है। कल्याण का अर्थ है परोपकार और दुख से मुक्ति। यहाँ देवता आगंतुकों और श्रद्धालुओं को

खुशी और कल्याण का आशीर्वाद देते हैं और उन्हें सभी समृद्धि और सांसारिक धन प्रदान करते हैं।वे भक्तों को दुखों से मुक्त करते हैं। मंदिर की सेवा डिग्गी में रहने वाले पंडितों के गूजर गौड़ कबीले द्वारा की जाती है।